

चली आई सबई खो होड़, मुरलिया की धुन सुनके.

गैया- बहड़ा दौड़ल आये- चारो पूरा कदु न खाये
भगीं अपनो जे _{sss} भगीं अपनो जे- गिरमा लोड़

मुरलिया की धुन... चली आई---

रुक आँख कजरा सें खाली- चाल चलें रेंसी मतवाली
भूल गई जे _{ssss} भूल गई जे चुनारिया ओढ़

मुरलिया की धुन... चली आई---

दादुर- मोर- पपीहा बोले- भेद जिया को मोरें खोले
कान्हा बहियाँ न _{sss} कान्हा बहियाँ न- मोरी मरोर

मुरलिया की धुन... चली आई---

पाँव पैजनियाँ हाँथों में पहिनें- पहिनें गले में कमर के गहनें
आई ललना खों _{sss} आई ललना खों- पलना में होड़

आज "श्रीबाबा श्री" कैसी आन बनी है

सास सें मोरी, खूब ठनी है

कान्हा तोसे लियो- नाता जोड़

मुरलिया की धुन...---

चली आई---